Fv – फरीसी और सदूकी एक चिन्ह माँगते हैं मत्ती १५:३९ से १६:४
और मरकुस ८:९बb-१२ | 1

– Save This Page as a PDF–

फरीसी और सदूकी एक चिन्ह माँगते हैं

मत्ती १५:३९ से १६:४ और मरकुस ८:९बी-१२

खोदाई: आपको क्या लगता है फरीसी और सदूकी वास्तव में आकाश में क्या देखने की उम्मीद कर रहे थे? इन धार्मिक नेताओं के लिए एक चिन्ह कितना आश्वस्त करने वाला रहा होगा? क्या उन्होंने विश्वास किया होगा? क्यों या क्यों नहीं? वे क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे थे?

चिंतन: क्या आप उन लोगों के रवैये में अपना कुछ भी देख सकते हैं जिन्होंने चिन्ह मांगा था? क्या आपको कभी-कभी आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने की यीशु की क्षमता पर संदेह होता है? ऐसा कैसे? क्या आप उस पर भरोसा करने और उस पर अपनी पूरी निर्भरता को स्वीकार करने के बजाय, उन संकेतों की मांग करके उसे परखना चाहते हैं जो आपके लिए उपयुक्त हैं? क्या आप वास्तव में मसीह के शब्दों पर विश्वास करते हैं कि पिता जानता है कि आपको उससे पूछने से पहले क्या चाहिए (मती ६:८)? क्या आपका जीवन उस प्रकार का विश्वास प्रदर्शित करता है?

येशुआ द्वारा भीड़ को खाना खिलाने के बाद (देखें Fu – यीशु ने एक बहरे गूंगे को ठीक किया और ४,००० लोगों को खाना खिलाया) उसने भीड़ को दूर भेज दिया (मरकुस ८:९बी)। फिर वह नाव में चढ़ गया और अपने साथी के साथ गलील सागर के पश्चिमी तट पर लौट आया, जिसे मती मगदान (१५:३९) के रूप में संदर्भित करता है और मरकुस दलमनुथा (८:१०) के रूप में संदर्भित करता है। मगादान एक शहर का नाम था, जबकि अरामी भाषा में दलमनुथा का मतलब बंदरगाह था। नतीजतन, दलमनुथा मगदान का बंदरगाह था जो कैपेरनम के पास स्थित था।

महासभा द्वारा नाज़रीन के मसीहाई दावों को
खारिज करने के बाद भी, कभी-कभी फरीसी और सदूकी प्रभु के पास आते थे और उनकी परीक्षा लेते थे। इस बार वे आए और उससे स्वर्ग से एक चिन्ह दिखाने के लिए कहा

Fv – फरीसी और सदूकी एक चिन्ह माँगते हैं मत्ती १५:३९ से १६:४
और मरकुस ८:९बb-१२ | 2

(मत्ती १६:१; मरकुस ८:११)। यह ऐसा था मानो वे कह रहे हों, “तुम्हारे चमत्कार केवल धोखा और धोखाधड़ी हैं। हमें स्वर्ग से कोई चिन्ह दिखाओ, जैसे सूर्य को स्थिर कर देना (यहोशू १०:१२-१४) या आग को बुलाना (प्रथम राजा १८:३०-४०)। शासक वर्गों का प्रत्येक वर्ग – फरीसी, लोगों के बीच अपने धार्मिक प्रभाव के कारण दुर्जेय थे; सदूकी, संख्या में कम, लेकिन धन और पद से शक्तिशाली; हेरोडियन, रोम की सारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, और उनके नामांकित टेट्रार्क्स; टोरा-शिक्षक, अपनी रूढ़िवादिता और शिक्षा के अधिकार को लेकर आए – सभी उसके खिलाफ साजिश और विरोध के एक मजबूत समूह में एकजुट थे।

फरीसी और सदूकी यीशु को बदनाम करने पर इतने आमादा थे कि वे पवित्र शहर में अपनी सीट से बाहर चले गए और डेकापोलिस के बुतपरस्त क्षेत्र में गहराई तक चले गए (मरकुस ७:३१)। अन्यथा सावधानीपूर्वक त्याग दिए जाने पर, वे आम तौर पर अन्यजातियों के क्षेत्र में जाने के बारे में कभी नहीं सोचेंगे। लेकिन मसीह से छुटकारा पाने के उनके दृढ़ संकल्प की कोई सीमा नहीं थी। वे, सब से ऊपर, उसके प्रचार में बाधा डालने और जहां तक संभव हो, उसे लोगों के स्नेह से दूर करने के लिए दृढ़ थे। वे उससे नफरत करते थे।

पहले भी दो बार, वे उसके पास चिन्ह माँगने आये थे। पहला मसीहा के मंत्रालय की शुरुआत में फसह पर था (यूहन्ना २:१८)। वहाँ उसने उन्हें आलंकारिक भाषा में अपने पुनरुत्थान का चिन्ह दिया, जिसका उपयोग उन्होंने उसके अंतिम परीक्षण में उसके विरुद्ध किया था। उनकी दूसरी मांग (मत्तीयाहू १२:३८) को अवमानना का जामा पहनाया गया था, परिणामस्वरूप येशुआ ने उन्हें तीन दिन और तीन रातों के लिए व्हेल के पेट से नीनवे को यूनुस के संदेश के बारे में और अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में अधिक आलंकारिक भाषा दी। उन्होंने कहा कि उनकी निंदा नीनवे के लोगों की तुलना में अधिक होगी क्योंकि उनके प्रति उनका रवैया, जो यूनुस से भी बड़ा था।

प्रभु ने उन्हें, भीड़ सहित, चेतावनी दी थी कि वे स्वर्ग से मिलने वाली रोटी के चिन्हों की खोज में न रहें। लोग उस समय उससे दूर हो गए थे क्योंकि उसने चमत्कारी भोजन के चिन्ह को दोहराया नहीं था और इसे मोशे की तरह वर्षों तक बनाए रखा था। इसलिए, उसके शत्रु उद्धारकर्ता के पास एक चिन्ह मांगने आए, जो वे जानते थे कि वह नहीं देगा, इस उम्मीद में कि लोग उससे और भी अधिक अलग हो जाएंगे।

निस्संदेह, समस्या येशुआ द्वारा किए गए चमत्कारों से नहीं थी बल्कि फरीसियों द्वारा उनकी व्याख्या से थी। यीशु बता सकते थे कि वे पाखंडी थे क्योंकि उन्होंने पहले ही निर्णय ले लिया था कि उनके चिन्ह शत्रु की ओर से थे (देखें Ek – यह केवल राक्षसों के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है)। यहूदी धार्मिक नेता उससे प्रश्न करने लगे। तथ्य यह है कि उन्होंने स्वर्ग से एक चिन्ह मांगा था, जिससे पता चला कि वे वास्तव में चिन्ह की तलाश नहीं कर रहे थे, बल्कि प्रभु को ईशनिंदा का दोषी ठहराने के लिए सबूत की तलाश कर रहे थे।

Fv – फरीसी और सदूकी एक चिन्ह माँगते हैं मत्ती १५:३९ से १६:४
और मरकुस ८:९बb-१२ | 3

प्रश्न करने का मौखिक रूप एक वर्तमान इनफिनिटिव है, जो निरंतर क्रिया दर्शाता है। वास्तव में, वे उनसे जिरह कर रहे थे।

फरीसियों और सदूकियों ने दिखावा किया कि वे एक चिन्ह चाहते थे जो दर्शाता हो कि यीशु वास्तव में, यहोवा के प्रवक्ता थे। यह चिन्ह केवल सामान्य अर्थ में “स्वर्ग” से नहीं था, बल्कि बातचीत ईश्वर के नाम के लिए एक शब्द को प्रतिस्थापित करने के पारंपरिक तरीके को दर्शाती है, जो “स्वर्ग में” रहता है। वे वास्तव में प्रभु से यह पुष्टि करने के लिए कह रहे थे कि वह ईश्वर के नाम पर अपने चमत्कार कर रहे थे और वास्तव में, इज़राइल के मसीहा थे। लेकिन पहले से ही अस्वीकार किए जाने के बाद, उसने उनके पतले से परदे वाले अनुरोध को ठीक से समझ लिया।

लेकिन यीशु ने चिन्ह की उनकी तीसरी माँग को पूरा करने से बिल्कुल इनकार कर दिया। उनकी प्रतिक्रिया में एक सरल लेकिन गहन दृष्टांत शामिल था (देखें Er – उसी दिन उसने दृष्टान्तों में उनसे बात की थी)। ऐसा करने से, जो लोग विश्वास के कानों से सुनते हैं वे सत्य को ग्रहण कर लेंगे, लेकिन संशयवादियों का न्याय अधिक भ्रम के साथ किया जाएगा। उन्होंने मौसम के मिजाज के बारे में एक सामान्य अवलोकन के साथ शुरुआत की। यहां तक कि सबसे साधारण पर्यवेक्षक भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि जब शाम होती है, तो आप कहते हैं, “आज मौसम अच्छा होगा, क्योंकि आकाश लाल है” (मत्ती १६:२)। और इसके विपरीत, सुबह में, आप कहते हैं, “आज तूफान होगा, क्योंकि आकाश लाल और बादलों से घिरा हुआ है।” वे फरीसी और सदूकी आकाश के स्वरूप की व्याख्या कर सकते थे, परन्तु [वे] अपने ठीक सामने समय के संकेतों की व्याख्या नहीं कर सकते थे (मती १६:३)। परमेश्वर से चिन्ह के लिए एक और अनुरोध का समय बहुत बीत चुका था। ऐसे कई मसीहाई चमत्कार, उपचार और भोजन हुए थे जो इस बात की गवाही देते थे कि यीशु ईश्वर का वादा किया हुआ पुत्र था।

यह उस बिंदु पर पहुंच गया था जहां केवल एक दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी ही दूसरा चिन्ह मांग सकती थी। यीशु ने अपने हृदय की गहराइयों से गहरी आह भरी और कहा: यह पीढ़ी चिन्ह क्यों माँगती है? मैं तुम से सच कहता हूं, यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई चिन्ह उसे न दिया जाएगा। हालाँकि, येशुआ ने कोई उत्तर नहीं दिया, जो वास्तव में वही प्रतिक्रिया थी जो उसने अन्य संशयवादियों को दी थी। यूनुस के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह न दिया जाएगा। इसके द्वारा, वह अपने स्वयं के पुनरुत्थान का उल्लेख कर रहा था। आह भौतिक थी, लेकिन इसका स्रोत आध्यात्मिक था – अपूरणीय शत्रुता, अटल अविश्वास और आने वाले विनाश की भावना। राष्ट्र को यह समझाने और समझाने के लिए कोई और सार्वजनिक चमत्कार नहीं होगा कि वह मसीहा था। अवसर पहले ही चूक गया था (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। अब उसे उन रब्बियों से अपनी पहचान के बारे में बात करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, उनके दिमाग दृढ़ थे, उनके दिल पत्थर की तरह ठंडे थे; इसलिये वह उन्हें छोड़कर चला गया (मत्ती १६:४; मरकुस ८:१२)। अविश्वास के लिए कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं होते।

Fv – फरीसी और सदूकी एक चिन्ह माँगते हैं मत्ती १५:३९ से १६:४
और मरकुस ८:९बb-१२ | 4

यूनुस का चिन्ह उन तीन दिनों और तीन रातों से जुड़ा है जो भविष्यवक्ता यूनुस ने एक विशाल शुक्राणु व्हेल के पेट में बिताए थे, जो पुनरुत्थान का चिन्ह है (मेरी टिप्पणी देखें यूनुस Au– व्हेल के पेट से जोना ने परमेश्वर से प्रार्थना की)। इस प्रकार, इज़राइल का प्राचीन भविष्यवक्ता येशुआ हा-मशीहाच की मृत्यु और पुनरुत्थान का एक आदर्श प्रकार है। यूनुस का चिन्ह इस्राएल को तीन अवसरों पर मिलेगा:

सबसे पहले, चिन्ह लाजर की मृत्यु और पुनरुत्थान में देखा जाएगा (देखें Ia – लाजर का पुनरुत्थान: यूनुस का पहला चिन्ह)।

दूसरे, इसे यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में देखा जाएगा (देखें Mc – यीशु का पुनरुत्थान: यूनुस का दूसरा चिन्ह)।

और तीसरा, यह अंतिम दिनों में महान क्लेश के दौरान दो गवाहों की मृत्यु और पुनरुत्थान में देखा जाएगा (मेरी टिप्पणी देखें प्रकाशितवाक्य Dm – दो गवाहों का पुनरुत्थान: जोनाह का तीसरा चिन्ह)।

यह बताना महत्वपूर्ण है कि पारंपरिक यहूदियों के लिए, यूनुस के चिन्ह पर साल में एक बार योम किप्पुर के सबसे उच्च पवित्र दिन पर विचार किया जाता है (निर्गमन जिओ
– प्रायश्चित का दिन पर मेरी टिप्पणी देखें)। यह इस सबसे महत्वपूर्ण दिन पर है कि भविष्यवक्ताओं से निर्दिष्ट पाठ कोई और नहीं बल्कि यूनुस की संपूर्ण पुस्तक है। इस प्रकार, जब हम पतझड़ में उच्च पवित्र दिवस सेवाओं में भाग लेते हैं, तो यहोवा उन लोगों को हर साल सच्चे मेशियाक का एक प्रमुख चिन्ह देना जारी रखता है जो इब्राहीम, इसहाक और याकूब के ईश्वर से प्यार करते हैं।